रायमल! राज्योंके अधिपति राजपूत आपका द्वार सेवन करते हैं। और ३ लज्जा रखतेहैं (लज्जित होतेहैं) ॥ ४ ॥

महाराणा श्रीरायमल्लजीके ज्येष्ठ पुत्र उडणा प्रथीराजजी।

ये बहुत वार यशस्वी और प्रतापी हुएहैं। लल्ला नामक पठानने सोलंखियोंसे 'टोडा' छीन लिया था, तब सोलंखी चीत्तौड़ जाकर अरजाऊ हुए इसपर कुंवर प्रथीराजजी अकस्मात् टोडे जा पहुंचे और टोडा विजय करके सोलंखियोंको दे दिया। इस अचानक पहुंचजानेसे लोगोंको यह मालूम न होसका कि ये इतने शीघ्र क्योंकर पहुंच गये अतः उसी दिन से यह उडणा प्रथीराजजी कहलाने लगे। इनका वृत्तान्त "वंशभास्कर" में भी लिखाहै।

गीत (२२)

टूंड चढे प्रथीमल भांजे टोडो,
ललां तणें सर धारे लोह ॥
बाये बाय नळी जिम बाजे,
म्रध मणधर जण आवै मोह ॥ १ ॥
कूभाहरै लडे खळ कीधा,
मैतलवै नह तास मुणै ॥

पवन झणंके सब रस परसै,
सत्रां सगहस नाम सुणै ॥ २ ॥
माल संभ्रम रहचे मीरबचा,
कर पै जूयल खंड किया ॥
अनल भरेण बांजती आठी,
हरण भुयंगम दिये हिया ॥ ३ ॥
कलमां चरण सार का चरिया,
सीसोदै नर भर समर ॥
कुरँग उरँग राता किण कारण,
हाड बाजतै नाद हर ॥ ४ ॥

टीका—लल्ला पठाण पर शस्त्र धारण करके कुंवर पृथ्वीराजने सेनाके मुखपर चढ़कर टोडाको भांजा (तोड़ा) उस युद्धमें यवनोंकी नलियों (पैरोंकी हड्डियों) में पवन भर कर वे पूंगीके समान बजने लगीं जिससे मणिधारी सर्पोंको मोह होगया ॥ १ ॥ कुंभा राणाके पौत्रने लड़कर उन दुष्ट यवनोंको भून डाले सो वे बोल नहीं सकते ॥ २ ॥ उस दूसरे रायमलने यवनोंको काटकर हाथ पैर जुदे जुदे करदिये, जिनमें पवन भरकर आठछिद्रों वाली (पूंगी) की तरँह बजने लगी जिसपर हरिण और सर्पोंका चित्त जाने लगा ॥ ३ ॥ उस युद्धमें शीसोदिया कुंवर पृथ्वीराजने तरवारसे यवनोंके चरण काट डाले, जिनकी हड्डियोंके बजनेसे हरिण और सर्प प्रीति युक्त होगये ॥ ४ ॥

गीत (२३)

पारसमें प्रीत बडै पाहूणै,
मद विपरीत महा रिण माह ॥
पडियाळगे नामियो पीथल,
पीधो सेन तणै पतसाह ॥ १ ॥
भालां तणौ पाणगो भारी,
कुंभ कळोधर जतैं कियो ॥
तण अवंहार बेवेळां तोडे,
गोरी सेन अचेत गियो ॥ २ ॥
पीथा जतैं तोड़ पत्रावे,
आंणे मुंह धकतो ऐराक ॥
असपत सेन न सकियो ऊठे,
छावा सींध तुहाळी छाक ॥ ३ ॥
प्रथीराज अर गंह पतसाही,
भुजळग धार अणी भाराथ ॥
साथ न हूंतो जिके सिकंदर,
सूरह जपियो लह्या साथ ॥ ४ ॥

टीका–कुमार पृथ्वीराजने पारसमें प्रीति करनेवाले, बडे पाहुने (लल्ला पठान) को उस बडे युद्धमें तलवारसे नमाकर विपरीत मद्य पिलाया और बादशाह (लल्ला) की सेनाने पीया ॥ १ ॥ महाराणा कुंभाकी कलाको धारण करनेवाले कुमार पृथ्वी-राजने उस युद्धमें भालोंकी १ पानगोष्ठी (मतवाल) की जिसे अपने २ दुहरे ३ बंधन तोड़कर (असावधानीसे) गोरीकी सेना अचेत होकर भगगई (यहां गोर नगरका रहने वाला होनेके कारण लल्लाको गोरी कहाहै) ॥ २ ॥ कुमार पृथ्वी-राजने जलता हुआ (बहुततेज) ४ मद्य बादशाहकी सेनाके मुहके लगाकर पिलाया सो हेसिंहके बच्चे ! (पृथ्वी-राज) तेरी उस छाकसे बादशाही सेना उठ न सकी ॥ ३ ॥ कुमार पृथ्वीराजने उस ६ युद्धमें तलवार धारण करके उसकी नोकसे बादशाह शत्रुका ६ गर्व मिटा दिया. इस युद्धमें सिकंदर लल्लाके साथ नहीं था इसीलिये वीर माना गया । यदि वह भी विद्यमान होता और पृथ्वीराजसे युद्ध करता तो उसका भी यंह ही हाल होता जो लल्लाका हुआ ॥ ४ ॥

इसी युद्धके विषयमें ये नीचे लिखीहुई दो प्राचीन तुकें भी कहावतके तौर पर प्रसिद्ध हैं ।

भाग लल्ला ! पृथ्वीराज आयो ।
सिंहकै साँथरै स्याल़ ब्यायो ॥

अर्थ–हे लल्ला ! पृथ्वीराज आया, भग, सिंहकी गुफामें गिदड़ने बच्चा दिया है सो कैसे रहेगा, भगजा ॥

महाराणा श्रीसंग्रमसिंहजी बडे
(सांगाजी)

ये महाराणा विक्रमी संवत् १५६५ में गद्दी विराजे और बडे वीर और यशस्वी हुए । इनके समयमें मालवा और गुजरातके बादशाह बहुत बलवान थे, जिन्होंने कई बार सांगाजीसे युद्ध किया पर हर लडाईमें उन्हें हारकर भागनाही पड़ा निदान एक बार दोनोंने शामिल होकर महाराणा पर चढ़ाईकी परन्तु उसमें भी दोनों बादशाहोंकोही भागना पड़ा ।

संवत् १५७४ में इन महाराणाने मांडूके बादशाह महमूदको कैद करके उसका जडाऊ ताज और कमर पटा लेकर उसको कैदसे छोड दिया, और कृपा करके उसको मांडूका राज्य पीछा देदिया, तथा इसी विजयकी खुशीमें केसरिया शाखाके चारण हरीदासको संपूर्ण चीतौड़का राज्य देदिया । परन्तु हरीदासजीने राज्य प्रबन्धमें कठिनता विचार कर पुनः राज्य शासन अपने स्वामीकेही अधीन कर दिया ।

संवत् १५८४ में महाराणा सांगाजीका बादशाह बाबरके साथ युद्ध हुआ जिसमें बादशाहको जब यह निश्चय होगया कि महाराणाका बल अधिकहै तो उसने बयाने तकका देश उन्हें देकर संधि करलेनी चाही, और कुछ कर देना भी स्वीकार करलिया, और इस संधिकी शर्तें सलहदी तंवरकी मारफत महाराणाके सामने पेशकी परन्तु महाराणाको तो यवनोंको

भारतवर्षसे निकाल देनाही मंजूर था इस कारण संधि करनेसे उन्होंने इनकार किया । तब सलहदी तंबर अपनी मारफत की हुई बातचीतको महाराणाके नामंजूर करनेसे अप्रसन्न होकर ठीक युद्धके समय पैंतीस हजार सवारोंसहित बादशाहकी फौजमें जा मिला । इससे तो महाराणाको कोई हानि नहीं हुई, परन्तु इस युद्धमें महाराणकि ललाटमें एक बडे वेगका तीर लगा जिससे महाराणा मूर्छित हो गये । तब कई राजा उनको शिविकारूढ कराके (पालखीमें डालकर) युद्धसे ले भागे । और पीछेसे सादड़ीका राजा अज्जा झाला छत्र चंवर लगा कर महाराणाके हाथी पर सवार होकर युद्ध करके वीरतासे काम आया । (उसही दिनसे सादड़ीवालोंपर छत्र चमर होते हैं) इधर वसवानामक ग्राममें आनेपर कि, जो वर्तमान समय में जयपुरके राज्यमें है महाराणाकी मूर्च्छा खुली, तब उन्होंने पूछा कि विजय किसकी हुई इसपर साथवालोंने सब हाल निवेदन किया । सो सुनकर महाराणा सांगाजीको अत्यन्त खेद हुआ. और आज्ञाकी कि, मुझे युद्ध क्षेत्रसे क्यों उठालाये इससे तो मुझपर भगनेका कलंक लगगया । इस कारण मैं यहीं रह कर सेना एकत्र करके बाबरको पराजित कर चित्तौड जाऊंगा । इस बात पर सोदा बारहठ जमणाजीने एक गीत सुनाया जो इनके काव्योंके अन्तमें लिखा है। फिर महाराणाके अधर्मी सेवकोंनें उनको विष देकर मारडाला ऐसी प्रसिद्धिहै सुना जाता है कि इन महाराणाके देहान्तके विषयमें बाबर अपनी तुजक बाबरीमें यों लिखता है कि मैनें चंदेरी फतहकी तब महाराणा सांगा बहुत बडी फौज लेकर दुबारा मेरे पर आता था, सो रास्तेमें दफैतन मरगया ।

इन महाराणाका देहान्त विक्रमी संवत् १५८४ में हुआ, इनके समयमें राजपूतानेके कितने ही भागमें मेवाड़का अधिकार विशेष होगया था और गवालियर, चंदेरी, कालपी आदिके राजाओंनें भी मेवाड़की अधीनता स्वीकार करली थी ॥ अमरकाव्यमें इनका देहान्त कालपीमें होना लिखा है, सो भी बाबरके लेखसे मिलता है।

गीत (२४)

भलो राण सगराम इम अधड़ची मुख भणे'
दुजड़हत दससहँस बोल दीधो ॥
पदमहत मयँकचो ग्रहण है अधपहर,
कलमचो ग्रहण दिन तीस कीधो ॥१॥
हठी रणषेत सगराम कुंभाहरै,
घड़ां दाणव तणी सझे रण घाय ॥
घणो तो सूर ससि ग्रहणहै दुयघड़ी,
पष उभै सरब गल कीध पतसाय ॥२॥
षलेंचिया धरा षागां गुहै षेंगरै,
असुरची अरथकै घर अथांणो ॥
मेल्हतो छांडतो बडा पोह माळवी,
रूक साराहियो राव राणो ॥ ३ ॥

मिले सगराम सगराम जुध मसलियो,
त्रजड़ वल षान षंधार तूटो॥
ग्रास भंडार सपतंग लै सरबगल,
छोडियां साह महमंद छूटो ॥ ४ ॥

टीका–१ शत्रु अपने मुखसे यह प्रशंसा करते हैं कि २ वीर महाराणा संग्रामसिंहका खड्ग अच्छा डोब दिया हुआ है। सूर्य और चंद्रमाका ग्रहण तो आधे प्रहर तक होता है परन्तु महाराणानें यवनोंका ग्रहण तीस दिन तक किया ॥ १ ॥ कुंभाके पोते हठी संग्रामसिंहने दानवरूपी यवनोंकी ३ सेनासे युद्ध किया जिसमें सूर्य चंद्रका ग्रहण तो दोही घडी होता है पर महाराणानें बादशाहका एक महीने तक पूरा ग्रहण कर लिया ॥ २ ॥ ५ घोडोंके मुंह आगे असुररूपी यवनोंके ४ टुकड़े टुकड़े करके पृथ्वीके लिये उनका अचार करडाला और मालवाके बादशाहको पकड़कर छोड दिया, जिससे उस महाराणाकी तरवारकी सबने प्रशंसा की ॥ ३ ॥ संग्रामसिंहने युद्धमें मिलकर बादशाहका मर्दन किया, और तरवारके बलसे खंधारके खानको तोड़कर भंडारके सहित राज्यके सात अंग लिये पीछे उस पूर्ण ग्रास कियेहुए मुहरम्मदशाहको कैदसे छोड़ा ॥ ४ ॥

गीत (२५)

साहां राव ग्रह मेल्हियो सांगै,
नियम न जोवै नहीं नियाव ॥

अमर उकेकल़ करो एकरां,
बोहो नामी जंपै बल़राव ॥ १ ॥
बल़ पायाल़ै चल़वियो बोलै,
जुग बोल़ियो घणा दिन जाय ॥
मांडव राव मुक्यो मेवाड़ैं,
केसव मूझ न मुकहो काय ॥ २ ॥
सेनापती मेह्लियो साहे,
घाये साझे मेछ घणा ॥
मोटाईह करै मेवाड़ो,
निसहर जंपै नारयणा ॥ ३ ॥
महदातार पयंपै माहव,
बोल़ किसो ऊचरां बियो ॥
ग्राहियां पछैं उग्रहणो गोविंद,
कीजो जिम सगराम कियो ॥ ४ ॥

टीका—भगवान् वामनजीके बन्धनमें पाताल वास करने वाला राजा २ वलि बहुत नम्र होकर 'जंपे' अर्थात् कहताहै कि हे अमर ! (भगवन्) महाराणा सांगाने मुजदशाहको कैद करके छोड़ दिया, और अपनी जगहपर बैठा दिया। किसी नियम और न्यायका विचार नहीं किया ॥ सो आपभी मुझे १ मुक्त करो ॥ १॥ ३ पातालमें चलाहुआ अर्थात् रहने

वाला बलि कहताहै कि हे केशव ! मैंने बहुत दिनोंसे आपके बन्धनमें रहकर युग पूरा करदिया । मेवाड़के राजा सांगाने मांडूके पातसाहको कैद करके पीछा ४ छोड़ दिया, अब आपभी मुझेभी क्यों नहीं छोड़ोगे ॥ २ ॥ बलि नारायणसे कहताहै कि सहस्रों शस्त्रधारी म्लेच्छोंको मारडाले और सेनाका दर्प रखणेवाले पातसाहको पकड़ लिया । तथा पीछे भी उसके साथ मोटाई अर्थात् बडापन कर उसको छोड़ दिया ॥ ३ ॥ मही (पृथ्वीका) दातार राजा बलि माधव (भगवान्) से प्रार्थना करताहै कि हे गोविन्द ! दूसरा वचन क्या बोलूं मेरी तो यह ही विनती है कि जैसे महाराणा संग्रामसिंहने ग्रहण करके पातसाहको मुक्त करदिया वैसेही आप मेराभी बन्धनसे उग्रहणा (छोडना) करो अर्थात् मुझेभी मोक्ष देवो ॥ ४ ॥

गीत (२६)

षंडां लष मेर पंवे षूमांणो,
रोसारुण रीसाणो राण ॥
सांगो बंध त्रिया नह साहै,
सांगो बँध साहै सुरताण ॥ १ ॥
रोहंणियाळ सझे रायांगुर,
घाये असुर उतारै घाण ॥
अबळा बाळ न धारै आडी,
षूंदाळम घातै षूमाण ॥ २ ॥

साझे मेछ सुजेड़[६] जस धरिये,
कल़कल़ कोप किये कमल़ँ[७] ॥
गाल़ाबंध महल़ँ[८] नह घातै,
गुणं[९] घातै पतसाह गल़॥ ३ ॥
असँमर[१०] गहे कलँम[११] किय आंवट,
बढतै घडा कँवारी बंद ॥
मेछांतणों प्रवाड़ो[१२] मोटो,
नवषंड हुवो राण नारियंद ॥ ४ ॥

टीका–नवों खंडोंमें महाराणाका यश १ चमकताहै अर्थात् प्रकाशमान हो रहाहै कि २ खुमानसिंहके वंशवाला महाराणा सांगा रोषारुण हो त्रिष्टों (कायरों)को बांधकर नहीं पकड़ता वह बादशाहोंको बांधकर पकडनेवाला है॥ १ ॥ ३ शत्रुकी प्रबल सेनाओंको रोकनेवाला ४ राजाओंका राजा (वीर) खुमाण स्त्रियोंको और बालकोंको नहीं पकडता किन्तु ५ राजाओं-परघात करता है ॥ २ ॥ यशस्वी राणाने कोपकर ६ भाला, सजा जिससे म्लेच्छोंके ७ मस्तक कल़कल़ करदिये अर्थात् छिन्न भिन्न करडाले । यह राणा ८ महिलाओंका (स्त्रियोंका) बन्धन नहीं करताहै किन्तु बादशाहके गलेमें ९ धनुषकी प्रत्यञ्चा अर्थात् रस्सीको डालताहै ॥ ३ ॥ कंवारी सेनाके सामने १० खड्ग लेकर महाराणा बढा और ११ यवनोंका नाश करडाला । हे राणा ! यह म्लेच्छोंका युद्ध नवों-खण्डोंमें बड़ा नामी हुआ ॥ ४ ॥

गीत (२७)

मोज समँद मालवत महाबल,
अचड बियां न हुवै अे आज ॥
मांडव गढ गुज्जर ग्रह मूके,
रेणवां दीध चत्रगढ राज ॥ १ ॥
मोकलहरा अधाप मामलां,
पोरस धिनो षत्रीबट पाण ॥
षितपुर तषत साहरा षोसे,
दीधा तैं पातां दीवाण ॥ २ ॥
सांगा ग्रह मोषण सुरताणं,
कूंभाहरा जोड़ करतार ॥
किय हरिदास राण केहरियो,
ब्रविया छत्र चमर बडवार ॥ ३ ॥
तूं हंमीर सारीसो त्यागी,
बर उमिया दीधो सु बर ॥
जुग चहुंवै बातां जग जोड़ी,
आहाड़ा रहसी अमर ॥ ४ ॥

['केसरिया' चारण हरिदासजी कृत]

[**नोट**–महाराणा सांगा जैसे वीर थे, वैसेही वदान्य (दानी) भी थे। इन्होंने केसरिया शाखाके चारण हरिदास जीको चित्तौड़का राज्य दान करदिया था। जिस पर हरिदासजीने एक तो यह, और दूसरा 'धन सांगा हात' इत्यादि गीत (जो कि इस गीतके आगेही लिखा गयाहै,) बनाकर महाराणाके यशको चिरस्थायी करदिया।]

टीका–हे रीझके समुद्र! रायमलके पुत्र! महाबल! आज ऐसी बातें दूसरोंसे नहीं हो सकती, तैंनें मांडूगढ और गुजरातके बादशाहोंको पकड़कर छोड़ दिये और चित्तौड़ जैसा राज्य चारणोंको देदिया ॥ १ ॥ हे झगड़ोंसे नहीं तृप्त होनेवाले मोकलके पौत्र! तेरे पौरुष और क्षत्रियत्वके अभिमानको धन्यहै, हे दीवान! तैंनें बादशाहोंकी भूमि, नगर और सिंहासन खोसकर चारणोंको देदिये ॥ २ ॥ हे महाराणा कुंभाके पोते! बादशाहोंको पकड़कर छोड़नेवाले महाराणा संग्रामसिंह! तैंनें मुझ हरिदास नामक केसरिया चारणको छत्र चमर देकर राणा बनादिया जिससे तू कर्ता (परमेश्वर) के समानहै ॥ ३ ॥ हे महाराणा! तू हमी सरीखा दातारहै और पार्वतीके पति (शिव) ने तुझे वर दियाहै इसलिये हे आहाड़ा! चारोंही युगोंमें तेरी दोनों बातें जगतमें अमर रहैंगी ॥ ४ ॥

गीत (२८)

धन सांगा हात हमीर कळोधर,
गौरीवै मोषण ग्रहण ॥

गढ आपिया नको गढपतियां,
तो ज्यूंही रायमाल तण ॥ १ ॥
दै गज गाम कोड़ हैंवर द्रब,
अधपत दत चतचै उनमान ॥
सिंहासण छत्र चमर सहेतो,
दूजे किणी न दीधो दान ॥ २ ॥
रजवट रीझ षीज धन राणा,
लड़ ग्रह मुंर सुरताण लिया ॥
षित चित्रकोट कव्या षूमाणा,
दिग विजई तैं रींझ दिया ॥ ३ ॥
सबलां सांड़ निबल साधारण,
ब्रवजै तू सांगा बर बीर ॥
किवराणा कीधा कैलपुरा,
हिंदवाणा रिव बिया हमीर ॥ ४ ॥

[केसरिया शाखाके चारण हरीदासजी कृत]

टीका—हे हम्मीरकी कलाको धारण करनेवाले गोर-वंशके पतिको पकड़ कर छोड़नेवाले महाराणा सांगा ! तेरे हाथोंको धन्य है, हे रायमलके पुत्र ! तेरे समान अन्य किसी राजाने गढ नहीं दिये ॥ १ ॥ हे राजा ! अपने चित्तके

अनुमान-पूर्वक हाथी गाम और करोड़ों घोड़े देकर सिंहासन, छत्र तथा चमर सहित जो दान आपने दिया है, वैसा अन्य किसीने नहीं दिया ॥ २ ॥ हे राणा ! आपका रजोगुण युक्त दान और क्रोध धन्य है, कि आपनें बादशाहसे युद्धकरके उसको १ तीनवार पकड़ लिया, और हे खुम्माणवंशी दिग्विजयी आपने चित्तौड़का राज्य कवियोंको प्रदान कर दिया ॥ ३ ॥ हे वीरवर महाराणा सांगा ! आप बलवानोंके लिये बलवान और निर्बलोंके लिये साधारण (बल नहीं करने वाले) कहलाते हैं, हे कैलपुरा ! हिन्दुओंके सूर्य, दूसरे हम्मीरसिंह ! आपने चित्तौड़का राज्य देकर कवियोंको राणा बना दिये ॥ ४ ॥

गीत (२९)

अवसाण नमो सांगा अड़पांयत,
माण पाण धन पंचमुष ॥
जडै जितूं सुरताण जँजीरां,
राण तमासा तणी रुष ॥ १ ॥
सूरांगुर रायमाल समोभ्रम,
बर स्त्रिव सगत तणैं वीराण ॥
सांकळ बेल जड़ै सुरताणां,
षेलं ज्युंही डारंण षूमाण ॥ २ ॥

सूरत झोक त्रलोक सराहै,
बीजल झोक दियंतां वाह ॥
अटकै लड़ लंगर असपतियां,
रामतियां ज्यूंही रिमराँह ॥ ३ ॥
सझबो सेल बाहिबो असमर,
धूपटबो अर नयँर धरा ॥
साहां पकड़ छोड़बो सांगा,
हांसा षेल्ह हमीर हरा ॥ ४ ॥

टीका—हे १ शिवके समान २ वीर सांगा! तेरे बडप्पन वीरता और ऐश्वर्यको नमस्कारहै तू ३ बादशाहको जो जंजीरोंसे जकड़ताहै सो मानो तेरे लिये एक खेलहै ॥ १ ॥ हे रायमलजीके ४ समान, वीर षुमाणसिंहके वंशवाले सांगा राणा! भगवान् शिव और शक्ति अर्थात् भगवती दुर्गाकी कृपासे तैनें सुलतानको जो पकड़कर कैदकर रक्खाहै सो तेरे लिये सचमुच यह खेलही है ॥ २ ॥ तेरी सूरतके झोकेकी तीनों लोक प्रशंसा करतेहैं, और तेरी ६ तलवारके झोकेपर वाह वाह देतेहैं, तैनें बादशाहको पकड़कर उसके बेड़ी डाल रक्खीहैं, सो ७ शत्रुओंको पकड़कर कैद करना तो तेरे लिये खिलवाड़है ॥ ३ ॥ हे महाराणा सांगा भाला (बरछा) संभाना, ८ तलवार चलाना और शत्रुओंके ९ नगरोंको १० जलाना और बादशाहोंको पकड़ पकड़ कर छोड़ देना तो तेरे लिये हंसी खेलहीहै ॥ ४ ॥

गीत (३०)

महँमद नें सांगण घावां मिल़या,
दीपंग[2] कोतक दीठा ॥
मांडव मदन रुदन ज्यौं[3] मसव्वण,
मणधर हुवा मजीठा ॥ १ ॥
सांगण सूर तनें सुर साषी,
तूठो बार्यां[4] सुजेड़[5] तण ॥
[5]काल़ा गोष बीबियां काजल़,
रह्या रतंबर नाग रण ॥ २ ॥
बीबड़ियां[6] रसग्राम[7] बिहंडे,
ढल़िया काजल़ रेण ढवी ॥
जाझ़ण[8] कोणं[9] धरत मझ झूलै,
नवकुल़ कीधी भांत नवी ॥ ३ ॥
[10]परँहँडरूप पदमहत पेषे,
कुंभकल़ोधर जुद्ध किया ॥
धवल़ागिर आंसुये धूंधल़ा,
तुरकां रुधर भुयंग तिया ॥ २ ॥
रोद रहँचिया[11] सांगण राणें,
कंलमां रोजा थया किम ॥

आँष तणैं जल़ नदी ऊपटी,

ओरँग सुरँगा थया इम ॥ ५ ॥

टीका-मांडूका १ बादशाह मुहम्मद और सांगा युद्धमें बावों मिले, जहां २ प्रत्यक्ष यह कौतुक देखनेमें आया कि यवनोंकी ३ स्त्रियोंके आंसुओंसे और यवनोंके रुधिरसे पातालके सर्प लाल होगये ॥ १ ॥ हे सांगा तू ५ भाला बढाकर ४ शब्दोंसे प्रसन्न हुआ उसका सूर्य साक्षी है, तेरे उस युद्धमें बीबियोंके काजल और यवनोंके रुधिरसे नागराज (सर्प) लाल रंगके होगये ॥ ३ ॥ ६ यवनोंकी स्त्रियोंके शृङ्गार रसके ७ समूहको (यवनोंको) तैंनें काटडाला, जिससे उनके रुदनसे कज्जल बहकर जमीनपर ठहर गया, और उसमें ८ बहुत ९ रुधिर मिलगया जिसमें झूलनेसे नवकुली नागोंमें तैंनें नवीन रीति करदी ॥ २ ॥ हे महाराणा कुंभाकी कलाको धारण करनेवाले महाराणा सांगा! तैंनें जो युद्धमें१० शत्रुओंको कटेहुए रूपवाले (कान्तिहीन) देखे उस समय यवनोंकी स्त्रियोंके आंसुओंसे धवलगिरी तो धुंधला होगया और यवनोंके रुधिरसे सर्प लाल पड़गये (अध्याहार है) ॥ ४ ॥ महाराणा सांगाने यवनोंको बडी भयंकर रीतिसे ११ काटडाला, जिससे यवनोंकी स्त्रियोंके आँखोंसे आंसुओंकी नदी बही जिससे बिना रंगवाले और बुरे रंगवाले थे सो श्रेष्ठ रंगवाले होगये ॥ ५ ॥

गीत (३१)

इब्राहिम पूरब दिसा न उलटै,
पछम मुदाफर न दै पयाण ॥
दषणी महमदसाह न दौड़ै,
सांगो दामण त्रहुं सुरताण ॥ १ ॥
साह येक दस येक न साझै,
विदस न साझै हेक बण ॥
सुजसै राण रायमल संभ्रम,
त्रेषलिया पतसाह त्रण ॥ २ ॥
सांई सूरो गंमण न साझै,
लीह नका लोपवै लग ॥
बापाहरै बल़ा क्रम बांधा,
पतसाहां त्रहुं तणा पग ॥ ३ ॥

टीका–इब्राहिम पूर्वमें नहीं बढ़ सकता, मुदाफ़र पश्चिमको नहीं आसकता, और मुहम्मदशाह दक्षिणमें नहीं बढ़ सकता इसतरह महाराणा सांगा तीनों बादशाहोंके लिये पगबंधन रूप होरहाहै ॥ १ ॥ एक बादशाह दूसरेकी सहायता नहीं कर सकता, और दूसरी दिशामेंभी एक अन्यका साझा नहीं कर सकते, सो महाराणा रायमल्लसरीखे महाराणा सांगानें तीनों बादशाहोंको रोंक दिये हैं ॥ २ ॥ इसलिये स्वामी बनकर

और वीर होकर चल नहीं सकते, और जो सीमा बांधदी है उसे लोप नहीं सकते। बापाके वंशवाले सांगा राणानें अपने बलसे क्रमपूर्वक तीनों बादशाहोंके पैर बांध दिये हैं ॥ ३ ॥

गीत (३२)

मेळे दळ सबळ कळाधर मोकळ,
नाम सहै सुरताणा नाद ॥
ईडर थकी मजीत उथापे,
पै ईडर थापिया प्रसाद ॥ १ ॥
सांवळ सहर ऊजळो सांगा,
काट कलम दळ तूं ज कियो ॥
रिध तिण पीर पूज ज्यो राणी,
थिर तिण हींदूकार थियो ॥ २ ॥
ऊलाळिया चढाये अणिये,
रोद ज तैं मेवाड़ा राण ॥
कलम कुराण बांग तज कहवा,
पोहोवै तण बांचवै पुराण ॥ ३ ॥
हींदूकार तणा हलकारे,
घणों कटक वँध मेळ घणां ॥
ईडर बळे वेद इधराया,
ताड़े दळ सुरताण तणां ॥ ४ ॥

टीका–हे मोकलकी कलाको धारण करनेवाले, बलवान् महाराणा सांगा ! तू अपनी फौज भेजकर बादशाहोंको नमा कर उनका शब्द सुनता है, और ईडरकी मसजिदको गिराकर वहांपर तैंनें १ मन्दिर बनवां दिया है॥ १ ॥ यवनोंके दलको काटकर तैंने सांवलानामक शहरको उज्ज्वल कर दिया, और जहांपर पीरोंकी पूजा होती थी वहां हिंदुओंके कार्य होने लगे ॥ २ ॥ हे मेवाड़के पति! तुमने२ भालोंके अग्रभागोंपर चढा-कर यवनोंको गिरादिये और वे लोग कुरान पढना और बांग (अजां) देना छोड़ कर ३ प्रभात समयमें पुराण बांचने लग गये ॥ ३ ॥ इस तरह तुमने अपनी बड़ी सेना भेजकर ईडर-मेंसे बादशाहकी सेनाको निकाल दी, जहां पछि हिन्दुओंके कार्य होने लगे और वेदोंका उद्धार होगया ॥ ४ ॥

गीत (३२)

असमेध अजामेध हुवा आगैं,
घणूं सुणे नरमेध घणो
आहाड़ा कर नवो ऊपनो,
ताई अरथग ज्यांग तणो ॥ १ ॥
सुर नर असुरे किणी न सुणियो,
बापारै सांगै कज बोम ॥
चोथो ज्याग कियो चीतोड़ै,
हंवै हुवा सालरैचर होम ॥ २ ॥

देवा कीध न कीधा दांणव,
सांगै जे निरमे सुकर ॥
हसंत ज्याग जग प्रसध होमतां,
हुवा बिधाता हेक हर ॥ ३ ॥
पुन फल़ ग्रहे ग्रहे फल़ पोरस,
मालतणों पहरे जसमाल़ ॥
करी कैलपुर कल़ह नवी कथ,
घड़ियो जंग न घड़े घांटाल़ ॥ ४ ॥

टीका-अश्वमेध और अजामेध यज्ञ तो पहिले सुनेहैं और नरमेध भी कई वार सुनाहै, परन्तु महाराणाके हाथसे शत्रुओं को होम करनेके अर्थ एक चौथे १ यज्ञकी सृष्टि हुई है ॥ १ ॥ महारावल़ बापाके वंशवाले महाराणा सांगाने जो कार्य कियाहै वह देवता, मनुष्य, वा असुर आदि किसीको करते नहीं सुना अर्थात् इस चित्तौड़पतिने चौथे प्रकारका यज्ञ किया, जिसमें उसने २ सालर वृक्षके खानेवालों (हाथियों) का होम किया ॥ २ ॥ सांगाने जो अपने हाथसे कार्य किया, वह न तो देवताओंने किया और न दानवोंने किया जिसमें उसने जगत्प्रसिद्ध ३ हाथियोंका होम किया । इस कारण महाराणा भी ब्रह्मा और शिव रूप होगया ॥ ३ ॥ अपने पुण्य और पराक्रम के फलसे ४ यज्ञमें ५ हाथियोंका होम करके कैलपुरा महाराणा सांगाने युद्धमें नयी कथा उत्पन्न की, और यशकी माला धारण की ॥ ४ ॥

गीत (३४)

पड़ै बूंब ढीली सहर सोर मांडुव पड़ै,
सुपह उज्जेण लग थाह साजै ॥
बार पतसाहचै हाथियां बाँधिया,
बार पतसाहसुं न सांम बाजै ॥१॥
कटक बध संझै चीतोड़पह कल़हतै,
बडा राणां तणां बिरद बहिया ॥
गैमरां तकै सुरताणरा ग्राहजै,
गैमरां धणी सगराम गहिया ॥ २ ॥
सार अंकुस सहे मालवत समर भर,
मल़े चांपानयर ढीलड़ी माण ॥
षडगबल़ षांभिया किता षेताहरै,
सींधुरां ल्हसकरां सहत सुरताण ॥ ३ ॥

टीका–दिल्ली और मांडूमें कोलाहल मचरहाहै, और इधर उज्जैन तकका थाह लेताहै, बादशाहके हाथी पकडकर अपने द्वारपर बांध रक्खेहैं परन्तु बादशाहसे जाकर मिलाप नहीं करता ॥ १ ॥ चित्तौड़के पतिने युद्ध करके बडे राणाओंका बिरुद रक्खाहै, और इस हाथियोंके पति सांगाने बादशाहके हाथी पकड़ रक्खेहैं ॥ २ ॥ अंकुशरूपी तरवार हाथमें लेकर चांपाने मांडू और दिल्लीका मान मर्दन करके इस खेताके वंश वाले महाराणा सांगाने अपनी तरवारसे कई यवनोंको तो

मारडाले और सेना और हाथियों सहित बादशाहको वांधलिया ॥ ३ ॥

गीत (३५)

सतबार जरासँध आगल़ श्रीरँग,
बिमँहां टीकम दीध बग ॥
मेलि़ घात मारे मधुसूदन,
असुर घात नांषे अल़ग ॥ १ ॥
पारथ हेकरसां हथणापुर,
हटियो त्रिया पडंतां हाथ ॥
देष जका दुरजोधण कीधी,
पछैं तका कीधी काँइ पाथ ॥ २ ॥
इकरां रामतणी तिय रावण,
मंद हरेगो दहकमल़ ॥
टीकम सोहि ज पथर तारिया,
जगनायक ऊपरा जल़ ॥ ३ ॥
एक राड़ भवमांह अवत्थी,
ओरस आणै केम उर ॥
माल़तणा केवा कज मांगा,
सांगा तू सालै असुर ॥ ४ ॥

[सोदा बारहठ जमणाजी कृत]

[नोट–यह गीत बारहठ जमणाजीने उस समय सुनाया था जब कि बाबरके युद्धमें महाराणाको मूर्च्छा आनेपर उन्हें साथवाले ले आये और वसवामें उनकी मूर्च्छा खुली जैसा कि ऊपर लिख आये हैं।]

टीका–आप १ विमना (उदास) क्यौं होते हो, सौ बार जरासंधसे २ विमुख होकर श्रीकृष्ण भगे थे फिर आपकी घात मेटकर असुरका घात किया॥ १॥ अर्जुन एक बार हस्तिनापुरमें द्रौपदीका दुःख देखकर हटा था, वहां दुर्योधनने किया सो सब जानते हैं पर अर्जुनने फिर कैसा किया॥ २॥ एक बार मूर्ख रावण सीताको हर लेगया था, परन्तु फिर रामचन्द्रने समुद्रपर पुल बांधकर कैसी की॥ ३॥ आप एक युद्धमें हारनेसे खेद क्या करते हैं हेसांगा राणा आप बादशाहके खटक रहे हो॥ ४॥

गीत (३६)

ऊगां विण सूर पेहवो[1] अंबर,
दीपक पोषै[2] जसो दुवार॥
पावस बना जेहवी प्रथमी,
सांगा बिण जेहो संसार॥ १॥
बिण रवि बोम[3] कसण[4] ज्योती बिण,
धाराहर बिण जसी धर॥

जैसी हरा जिसौ जाणेवो,
तो बिण प्रथमी कलपतर ॥ २ ॥
जलहर गयो दुनी जीवाड़ण,
फबै नहीं दीपग फरक ॥
साहां ग्रहण मोषणों सांगो,
आंथमियो मोटो अरक ॥ ३ ॥

टीका–सूर्य ऊगे विना जैसे आकाश १ वृथा है दीपक २ बिना जैसे गृहकी शोभा नहीं, और वर्षा ऋतु विना जैसे पृथ्वी शोभा नहीं देती उसी तरहं महाराणा सांगा बिना संसार दीखता है ॥ १ ॥ हे कल्पवृक्ष! जैसे सूर्य बिना ३ आकाश, ज्योति बिना ४ अग्नि, और मेघ बिना जैसी पृथ्वी मालूम पड़ती है, उसी तरह तेरे बिनाभी पृथ्वी शून्य दीखता है॥२॥ हा! दुनियाको जिलानेवाला मेघ चला गया, हा बादशाहोंको पकड़ पकड़ कर छोड़ देनेवाला प्रचंड सूर्य आज अस्त हो गया ॥ ३ ॥

महाराणा श्रीरत्नसिंहजी ।

महाराणा श्रीरत्नसिंहजी संवत् १५८४ में गद्दी बैठे । ये वीरतामें तो महाराणा सांगाजी सरीखे ही थे परन्तु क्रोधी वहुत थे, सांगाजी सरीखा धैर्य और गम्भीरता इनमें नहीं थी, इनने अपने राज्य समयमें चित्तौड़के नगर एवं गढके द्वार कभी

बंद नहीं कराये, बहुधा यही कहा करते थे कि द्वार उन राजाओंके बंद होते हैं जिनको शत्रुका भय हो वा जो प्रजापालनमें असमर्थ हों, शत्रुओंको मेरा भय है मुझको शत्रुओंका भय नहीं है। जबतक ये विद्यमान रहे, गुजरात वा मालवाके बादशाहोंको चित्तौड़पर मन बढानेका समय न मिला । ये बूँदीके राव सूरजमलजीको उनके भानजे विक्रमादित्यजी (जो महाराणा रत्नसिंहजीके कनिष्ठ भ्राता थे) उनका पक्ष करनेके कारण मारकर स्वयंभी उनके (सूरजमलजी) हाथसे वि. सं. १५८८ में मारे गये, इनका वृत्तान्त 'वंशभास्कर' में दूसरे प्रकारसे भी लिखा है॥

महाराणा श्रीविक्रमादित्यजी ।

महाराणा विक्रमादित्यजी रत्नसिंहजीके छोटे भाई थे जो उनके मरनेबाद वि. सं. १५८८ में चित्तोड़की गद्दी बैठे। ये बहुत कायर और विषयी राजा थे, इन्होंनें सब भाई बेटोंको थोड़ेही समयमें अप्रसन्न कर दिये, इसलिये मौका पाकर गुजरातके बादशाह बहादुरशाहने मेवाड़पर चढाईकी, तब विक्रमादित्यजीनें महमूदका जड़ाऊ ताज और दुपट्टा देकर संधि करली। सं. १५९२ में बहादुरशाहने मालवाके बादशाहको साथ लेकर चित्तौड़पर चढाईकी सो सुनकर विक्रमादित्यजीकी दुष्टताका ध्यान न करके महाराणा सांगाजीके काका सूरजमलजीके पुत्र बाघसिंहजी जो प्रतापगढके राजा थे, युद्धार्थ चित्तोड़की सहायतामें पहुँचे। और विक्रमा-

दित्यजीको उनके छोटे भाई उदयसिंहजी सहित उनकी ननिहाल (नानेरा) बूँदीमें पहुँचा दिया। पीछे तेरह हजार स्त्रियों सहित सब रनवासको चितामें जलाकर आप चित्तोड़का राज्य चिह्न अपने शिरपर धारण कर चित्तोड़की विजयके लिये अपना बलिदान करनेको युद्धमें रवाना हुए। इस समय बाघसिंहजीने अपने ऊपर चित्तोड़ राज्यका छत्र लगाया था जो राज्य करनेकी लालसासे नहीं किन्तु चित्तोड़का राज्य महाराणाओंके वंशमें रखनेकी इच्छासे अपना बलिदान देनेके लिये। धन्य है उस वीर बाघसिंहको जिसने अपने कुलको अधिराज बनाये रखनेकी इच्छासेही चित्तोड़को अपना बलि दिया। थोड़ीही देरतक युद्ध करके चित्तोड़के बत्तीस सहस्र वीर क्षत्रिय रणशय्यामें सोये और तेरह सहस्र स्त्रियां चितामें जलगई, यह चित्तोड़का दूसरा साका कहलाता है। इस युद्धके कुछही दिन पीछे बहादुरशाह मंदसोरके समीप बादशाह हुमायूंके साथ एक युद्धमें पराजित हुआ जिससे विक्रमादित्यजीके हाथ बिना प्रयासही चित्तोड़ पीछा लग गया परन्तु थोडे समय बादही सांगाजीके बड़े भाई पृथ्वीराजजीका पासवानिया पुत्र बनबीर विक्रमादित्यजीको मारकर स्वयं गद्दीपर बैठ गया। थोड़े वर्ष पीछेही मेवाड़के सरदारोंने बनवीरको निकालकर उदयसिंहजीको गद्दीपर बिठलाये।

महाराणा उदयसिंहजी।

उक्त महाराणा विक्रमादित्यजीके पीछे वि. सं. १५९४ में गद्दी बैठे, और सं० १६२८ में इनका देहांत हुआ। ये महाराणा साधारण ढंगके राजा थे। इन्होंने चित्तोड़ छूटनेसे आठ वर्ष

पहिलेही सं. १६१६ में अपने राज्यके नैऋत्य भागमें पीछोला तालावके किनारे महल बनवाया और शहर बसाना प्रारंभ कर दिया, जो समय पाकर मेवाड़की वर्तमान राजधानी (उदयपुर नगर) होगया । इन महाराणाके समयमें अकबर बादशाहनें चित्तोड़पर चढाईकी । और चार महीनेतक घेरा रक्खा, जिसमें जयमल्लजी राठोड़के काम आनें बाद गढमेंके सब लोग बाहर निकल आये और बडी वीरतासे लड़ते हुए शत्रुओंके हाथ काम आये । यह चित्तोड़का तीसरा साका हुआ जिसमें एक सहस्र पठान जो गढमें गोलंदाज थे उन्हें छोड सबके सब क्षत्रिय मारे गये कोई बाकी न बचा ।

गीत (३७)

जेसलगिर चाह सँसारो जाणैं,
सोहड़ तरँगम करे सज ॥
उदयासीह भला ओहटिया,
रिम गढ कटकां तणी रज ॥ १ ॥
तो आंगमण नमो सांगातण,
रढ रावण मेवाड़ा राण ॥
पमँगां अणी दुरग पींजरिया,
षत्रवट तो षड़तां षूमाण ॥ २ ॥
षेताहरै नत्रीठा षड़िया,
रिमहर माथे पमँग रह ॥

गह मह षेह घणां गूँदलिया,
समियाणा कोटजा सह ॥ ३ ॥
महमा बढी मयँक कुल मंडण,
पोह अनवारां प्रभत पड़ी ॥
कटकांतणी दुथणचे कोटे,
चोषी रज कांगरै चडी ॥ ४ ॥

टीका—वीरोंको और घोड़ोंको सजकर महाराणा उदय सिंहने जैसलमेरकी सहायता की सो संसार जानता है महाराणाने सेनाकी रजसे शत्रुओंके गढोंको ढक दिये ॥ १ ॥ हे सांगाके पुत्र ! तुह्मारे पराक्रमको नमस्कारहै, हे रावणके समान हठ करनेवाले खुमाणवंशी मेदपाटेश्वर ! तैंने क्षत्रियमार्गमें चलकर घोड़ोंकी सेनासे गढोंको कैद करलिये ॥ २ ॥ खेताके पुत्रनें वेगसे शत्रुओंके सिरपर घोड़े चलाकर खेहकी अत्यंत भीड़से सुमियाणा आदिको गदले कर दिये ॥ ३ ॥ जिससे चन्द्रवंशके कुलके मंडन जैसलमेरक राजाकी महिमा बढ़ गई। और कीर्ति हुई कि, दुश्मनोंके कोटपर सेना समुद्भूत (सेनाके चलनेसे उड़ी हुई) रज चढ गई ॥ ४ ॥

महाराणा श्रीप्रतापसिंहजी।

महाराणा श्रीप्रतापसिंहजी उदयसिंहजीके देहान्त होने पछि वि. सं० १६२८ में गद्दी बिराजे इनके जैसे यशस्वी और वीर राजा भारतवर्षमें विरले ही हुए हैं इस छोटी पुस्तकमें इनका सविस्तर हाल लिखना असंभव है। जो महोदय

इनका सविस्तर हाल पढना चाहैं वे टाडसाहबके इतिहासमें देखैं, अथवा बुन्दीके सुप्रसिद्ध कवि सूर्यमल्लजीके बनाये 'वंशभास्कर' ग्रंथमें देखैं, यहां केवल इतनाहीं लिख देना बस होगा कि मेवाड़के महाराणाओंकी कीर्ति जो संसारके आधुनिक व्यक्तिमात्रके जिह्वाग्रगत होरही है वह सब इन्हीं वीराधिराजकी संचित की हुई है। जिन्होंनें अपने धर्मकी रक्षाके अर्थ राज्यभी खोदिया। जो जंगलोंमें रातदिन भूखे प्यासे भटकते रहे। जिनको कई बार रहनेके अर्थ महल तो कहां पर पर्णकुटी भी उपलब्ध नहीं हुई। परन्तु धन्य है उस वीरेन्द्रकी माताको जिसके क्षात्रधर्मके त्राता पुत्रने यवन बादशाह अकबरके सामने कभी सिर नहीं नमाया, उस पुरुषसिंहकी [प्र]शंसा कहांतक की जावै वैसा न तो हुआ न होगा। इन [म]हाराणाका देहान्त वि० सं० १६५३ में हुआ था।

गीत (३८)

ओछो तिल नकूं नकूं तिल अधको,
सुणतां सुकव करां ले माप ॥
तूं ताहरा राण टोडरमल,
परियां सारीषो परताप ॥ १ ॥
परियां अधक कहां किम पातल,
रायांतिलक हींदवां राण ॥
तैं सिर नह नमियो सुरताणा,
साँगै गह मूका सुरताण ॥ २ ॥

ओछो केम कहां ऊदावत,
अकबर कहर तणों तप ईष॥
अकबरसूं रहियो अणनमियो,
सुरताणां ग्रहियां सारीष॥३॥
कुळ उधोर प्रताप कहंतां,
पोढो घणूं घणा ब्रद पाय॥
मणां न तो कुळ मणां न तोमें,
मणां न सुकव बषाणां माय॥४॥

टीका–हे महाराणा प्रतापसिंह! मैं निश्चय करके कहता हूं कि तू तेरे पूर्वजोंसे न तो तिलभर अधिक है, और न तिलभर न्यून है, तेरे पूर्वज जैसे प्रतिज्ञाके लंगर पहिननेवाले (वीर) हुए वैसाही तू भी है॥१॥ तुझको तेरे पूर्वजोंसे अधिक कैसे कहैं क्योंकि राणा हिंदुओंके राजाओंके तिलक हुए हैं; तैने तो बादशाहोंको सिर नहीं नमाया और राणा सांगाने बादशाहोंको पकड़ पकड़कर छोडदिये॥ २॥ परन्तु हे उदयसिंहके पुत्र! अकबरके उग्र तपको देखते हुए तुझको अपने पूर्वजोंसे न्यून भी क्यौंकर कहैं, क्यौंकि अकबरकी प्रबल उग्रताको देखते उसको शिर न झुकाना ही बादशाहोंको पकड़कर छोडनेके बराबर है॥ ३॥ जैसे तेरे पूर्वज बलवान् और स्तुतिके योग्य हुए वैसाही तूभी वीर और प्रशंसनीय

है, हे महाराणा! न तो तेरे कुलमें कुछ न्यूनता है, न स्वयं तेरेमें न्यूनता है, और न सुकविके वर्णनमें किसी तरहकी न्यूनता है ॥ ४ ॥

गीत (३९)

बिजड़ ताप तो नमो परताप सांगण बिया,
जगत या अकथकथ बात जाणी ॥
कहर राणांतणी बार मझ एकठा,
प्रसण राषै नको हंस पाणी ॥ १ ॥
उदयवत आज दुनियाण सह ऊपरा,
सारसो तार लागो सबांहीं ॥
हंस राषै जिकां नीर अळगो हुवै,
नीर राषै जिकां हंस नाहीं ॥ २ ॥
करां खग झाल दुहुं राह मातो कळह,
दूठ लागो षळां येण दावै ॥
जीवरी आस तो प्रसण नह गहै जळ,
जळ गहै प्रसण तो जीव जावै ॥ ३ ॥
दई ओ दई गत कुंभक्रन दूसरा,
चाह गुर आपरै पंथ चालै ॥
राण दइवाण पर हंस लागो रिमा,
हंस जळ जू जुवै पंथ हालै ॥ ४ ॥

टीका—हे दूसरे सांगा महाराणा प्रतापसिंह ! तुह्मारे खड्गकी तापको नमस्कार है जिसकी जगतमें एक विचित्र कथा प्रगट हुई है कि, प्रलय करनेवाली महाराणाकी तलवारके आगे शत्रुगण जीव और पराक्रम साथ नहीं रखते ॥ १ ॥ हे उदयसिंहके पुत्र प्रतापसिंह ! संसारमें तेरे श्रेष्ठ खड्गका ताप सबको लगता है अतः जो शत्रु जीव रखना चाहते हैं उनमें तो पराक्रम नहीं रहता और जो पराक्रम रखना चाहते हैं उनका जीव नहीं रहता ॥ २ ॥ हे वीर ! तू खड्ग लेकर यवनोंके दलके साथ ऐसा पड़ा है कि जिनको जीवकी आशा है वे तो पराक्रम नहीं रखते और जो पराक्रम रखते हैं वे जीवसे हाथ धो बैठते हैं ॥ ३ ॥ हे स्वेच्छाचारियोंके गुरु दूसरे कुंभकर्ण ! बड़े आश्चर्यकी बात है किन्तू वीर अपनेही मार्गपर चलता है, हे दीवान महाराणा ! तू शत्रुओंके जीवपर ऐसा लगा है कि उनके पराक्रम और जीव जुदे जुदे मार्गसे जाते हैं एक स्थानपर नहीं रहते ॥ ४ ॥

गीत (४०)

आलापै राग गारडूं अकबर,
दै पैंतीस असटं कुळ दाव ॥
राण सेस बसुधा कथ राषण,
राग न पांतरियो अहराव ॥ १ ॥

मिणधर छत्रधर अवर गेल मन,
ताइधर रजधर सींधतण ॥
पूंगी दल़ पतसाह पेरतां,
फेरै कमल़ न सहँसफण ॥ २ ॥
गढ गढ राफ़ राफ मेटे गह,
रेण षत्रीध्रम लाज अरेसं ॥
पंडरवेस नाद अण पीणग,
सेस न आयो पतो नरेस ॥ ३ ॥
आया अन भूपत आवाँहण,
भुजँगे भुजँग तजे वल़ भंग ॥
रहियो राण षत्रीध्रम राषण,
सेत उरंग कलोधर संग ॥ ४ ॥

टीका—अकबर रूपी १ कालवेलियेने क्षत्रियोंके पैंतीस वंशोंरूपी २ आठ कुलोंके सर्पोंपर दाव देदिया, परन्तु पृथ्वीपर कथा रखनेके लिये ३ सर्पराज (शेषनाग) रूपी महाराणा प्रतापसिंह अकबरके गानेसे अपने कुलको नहीं भूला ॥ १ ॥ मणियोंको धारण करनेवाले अन्य सर्पोंरूपी राजाओंके मन डुल गये परन्तु ४ शत्रुओंको धारण करनेवाले (वीर) और रजोगुणको धारण करनेवाले शेषनागरूपी महाराणा प्रतापसिंहने बादशाहकी सेनारूपी पूंगीकी प्रेरणासे मस्तक नहीं

हिलाया ॥ २ ॥ और गढों गढोंमें ९ मुसलमानी धर्मके विरोधियोंका घमंड मेट दिया, परन्तु क्षत्रियधर्मकी लज्जामें निष्कलंक श्वेतवेश (रंग) वाला और पूंगीके नादको नहीं पीनेवाला शेषनागरूपी महाराणा प्रतापसिंह नहीं आया ॥ ३ ॥ ७ बुलानेसे सब राजारूपी सर्प बलहीन होकर आगये, परन्तु क्षत्रियोंके धर्मकी रक्षा करनेवाला ८ शेषनागरूपी महाराणा प्रतापसिंह नहीं आया ॥ ४ ॥

गीत (४१)

गयँद मानरै मुहर ऊभो हुतो दुरद गत,
सिलहपोसां तणां जूथ साथै ॥
तद बही रूक अणचूक पीतल तणी,
मुगल बहलोलखां तणे माथै ॥ १ ॥
तणै श्रमऊद असवार चेटक तणै,
घणै मगरूर बहरार घटकी ॥
आचरै जोर मिरजातणैं आछटी,
भोचरै चाचरै बीज भटकी ॥ २ ॥
सूरतन रीझतां भीजतां सैलगुर,
पहां अन दीजतां कदम पाछे ॥
दांत चढतां जवन सीस पछटी दुजड़,
ताँत सावण ज्युहीं गई जाछे ॥ ३ ॥

बीर अवसाण केवाण उजबक बहे,
राण हथबाह दुय राह रटियो ॥
कट झलम सीस बगतर बरँग अँग कटे,
कटे पाषर सुरँग तुरँग कटियो ॥ ४ ॥

[बोगसा जातिके चारण गोरधनजी कृत]

[**नोट**–यह गीत हलदी घाटीके युद्धका है ।]

टीका–आमेरके महाराजा मानसिंहके हाथीके १ आगे अपने मददगार सवारोंको साथ लेकर बहलोलखां हाथीकी तरह खड़ाथा उस समय शत्रु (बहलोलखां) के पास पहुंचे हुए महाराणा प्रतापसिंहकी तलवार उसके सिरपर वही ॥ १ ॥ उदयसिंहके पुत्र चेटकके सवार महाराणाने शरीरको चीरनेवाली तलवारको बहुत जोशमें भ्रमाकर अपने हाथके जोरसे मिरजाके ऊपर मारी सो मानो २ ठठेरेकी एरण पर बिजुली गिरै जिस तरहं सिर काट कर निकल गई ॥ २ ॥ सूर्य प्रसन्न होने लगा, बडे बडे पहाड़ रक्तसे भीग गये, अन्य राजा अपने पैर पीछे देने लगे उस समय महाराणाने सामने आये हुए मुसलमान पर तलवार मारी सो साबुनको तांत. काटकर निकलती है इस तरह काटकर निकल गई ॥ ३ ॥ उस वीरने अपूर्व वारसे तलवार चलाई सो महाराणाकी इस हस्तबाह की हिंदू मुसलमान दोनोंने बहुतही प्रशंसा की कि जिसके खड्गसे बहलोलखांका टोप कट, शिर कट, बख्तर कट,

शरीर कट, और पाखर कटकर सुरंग रंगवाला घोड़ा तक कटगया ॥ ४ ॥

गीत (४२)

मह लागो पाप अभनमा मोकल़,
पँड सुदतार भेटतां पाप ॥
आंज हुवा निकलंक अहाड़ा,
पेखे मुख ताहरो परताप ॥ १ ॥
चढतां कल़जुग जोर चढंतो,
घणा असत जाचतो घणो ॥
मिल़तां समैं राण मेवाड़ा,
टल़ियो प्राछत देह तणों ॥ २ ॥
स्रग म्रतलोक मुणे सीसोदा,
पाप गया ऊजमे परा ॥
होतां भेट समैं राव हींदू,
हुवा पवित्र सँग्राम हरा ॥ ३ ॥
ईषे तूझ कमल़ ऊदावत,
जनमतणों गो पाप जुवो ॥
हेकण बार ऊजल़ा हींदू,
हरसूं जाण जुहार हुवो ॥ ४ ॥

टीका–कवि कहताहै कि कलियुगका जोर बढनेसे बहुत झूठे और अधर्मी राजाओंसे याचना करनेसे मुझको पाप लग गया, सो हे मोकलके समान महाराणा प्रतापसिंह ! आज तेरा मुख देखकर उस पापसे छूटा हूं ॥१–२॥ हे सीसोदिया ! स्वर्गलोक और मृत्युलोक कहते हैं कि आज उन पापोंका उद्यापन होगया और तुझ संग्रामसिंहके पोते हिंदुओंके पतिके दर्शन होनेसे मैं पवित्र होगया ॥ ३ ॥ हे उदयसिंहके पुत्र ! तेरा मुख देखनेसे मेरा जन्म जन्मका पाप जुदा होगया सो प्रतापसिंहसे जुहार क्या हुआ मानो परमेश्वरसे जुहार होगया४॥

गीत (४३)

षटकै षत्रवेध सदा षेहड़तो,
दिनप्रत दाषंतो षत्रदाव ॥
अकबर साह तणौं ऊदावत,
राण हिये चरणां अन राव ॥ १ ॥

नह पलटै षरड़कै अहोनिस,
घड़ दुरवेस घड़े घण घाव ॥
सांगा हरो तणे आलम सह,
पांतरदै महपत अन पाव ॥ २ ॥

धर वाहरू प्रताप षड़गधर,
सुंज वीसरै न पाषर सेर ॥

अकबर उरमें साल अहाड़ो,
ओयणे सेवग भूप अनेर ॥ ३ ॥
राव हींदवो तणों रोदां रिप,
राणो आपाणी कुलरीत ॥
पड़िया रहै अवर न्रप पावां,
चढियो कुंभ कलोधर चीत ॥ ४ ॥

[आसिया शाखाके चारण पीथाजी कृत]

टीका-क्षत्रियोंके मार्गमें चलनेवाला महाराणा युद्धमें बादशाह अकबरके चित्तमें खटकताहै, और अन्य राजा सेवामें पड़े रहते हैं, इस कारण महाराणा प्रतापसिंह सदा अकवरके हृदयपर चढा रहताहै, और अन्य राजा चरणोंमें पड़े रहते हैं ॥ १ ॥ फकीरकी तरह हुआ अकबर मनमें घाट घणा करताहै, और सदा महाराणा उसके मनमें खटकता रहताहै, परन्तु सांगाके वंशवाला प्रतापसिंह संसारकी रक्षा करनेवाला भूलकरभी अकबरकी तर्फ पांव नहीं देता ॥ २ ॥ महाराणा प्रतापसिंह पृथ्वीका रक्षकहै अतः वह वीर भूल कभी नहीं करता सो अन्य राजा तो अकबरके घरकी सेवा करनेवाले हैं परन्तु महाराणा अकबरकी छातीमें साल रूपहै ॥ ३ ॥ कुंभाकी कलाको धारण करनेवाला महाराणा प्रतापसिंह अपने कुलकी रीतिको रखकर ‘ हिन्दुपति ’ और ‘ यवनोंका रिपु ’ कहलाता है इस कारण महाराणा तो अकबरके हृदयमें बना रहता है और दूसरे राजा उसके पैरोंमें पड़े रहते हैं ॥ ४ ॥

बीकानेर महाराजके भ्राता पृथ्वी-राजजीके कहेहुए काव्य।

महाराणा श्रीप्रतापसिंहजी अकबरको बादशाह नहीं कहते थे, सदा तुरक कहा करते थे। एक दिन अकबरको खबर मिली कि अब महाराणा बादशाह कहने लग गये हैं। उस समय बीकानेरके महाराजा रायसिंहजीके छोटे भाई पृथ्वीराजजी जो बादशाहके दर्बारमें रहा करते थे, उन्होंने निवेदन किया कि यह खबर गलत है। इसपर बादशाहने कहा कि तुम सही खबर मंगाकर अर्ज करो। तब पृथ्वीराजजीने निम्नलिखित दो दोहे बनाकर महाराणा साहबके पास भेजे। इन दोहोंके उत्तरमें महाराणा साहबने भी तीन दोहे लिख भेजे जिनका यहां ही आगे उल्लेख किया गया है।

पृथ्वीराजजीने वीरशिरोमणि महाराणाके उत्साहको अधिक उत्तेजित करनेके लिये अन्यान्य कई दोहे और गीत निर्माण किये। उनमेंसे जो कितने ही प्राप्त हुए हैं वे यहां लिखे गये हैं।

सौराष्ट्री दोहा (४४, ४५)

पातल जो पतसाह, बोलै मुख हूंता बयण।
मिहर पछम दिस मांह, ऊगै कासप राववत॥१॥
पटकूं मूछां पाण, कै पटकूं निज तन करद।
दीजे लिख'दीवाण,इण दो महली बात इक॥२॥

टी०—महाराणा प्रतापसिंह यदि पातसाहको अपने मुखसे पातसाह कहैं तो कश्यपजीके सन्तान भगवान् सूर्य पश्चिम दिशामें उगैं, अर्थात् जैसे सूर्यका उदय पश्चिम दिशामें कदापि सम्भव नहीं वैसे ही आप (महाराणा) का पातसाह वचन कहना भी नितान्त असम्भव है ॥ १ ॥ हे दीवाण ! मैं अपनी मूंछपर पाण दूं, अथवा अपने शरीर पर करद (तलवार) डालूं इन दोनोंमेंसे एक बात लिख दीजिये ॥ २ ॥

इन दोहाका उत्तर—जो कि महाराणा साहबने भेजा था—

दोहा (४६, ४७, ४८)

तुरक कहासी मुख पतो, इण तनसूं इकलिंग ।
ऊगै जांही ऊगसी, प्राची बीच पतंग ॥ १ ॥
खुसी हूंत पीथल कमध, पटको मूंछां पाण ।
पछटण है जेतै पतो, कलमा सिर केवाण ॥ २ ॥
सांग मूंड सहसी सको, समजस जहर सवाद ।
भड़ पीथल जीतो भलां, बैण तुरकसूं वाद ॥ ३ ॥

टी०—भगवान् "एकलिंग" की शपथ है, इस शरीरसे प्रतापसिंहके मुखसे पातसाह तुरकही कहावैगा । और भगवान सूर्यका उदय जहां होता है वहां ही पूर्व दिशामें होगा ॥ १ ॥ हे वीर पृथ्वीराज ! आप प्रसन्न होकर मूछोंपर पाण लगावैं अर्थात् निःशङ्क होकर मान रक्खैं । और जबतक प्रतापसिंह

है, केवाण (कृपाण) अर्थात् खड्गको यवनोंके शिरोंपर जानैं ॥ २ ॥ राणा प्रतापसिंह सिरपर भाला सहैगा क्योंकि अपने बराबरवालेका जस जहरके सदृश होता है, सो हे भट पृथ्वीराज ! आप तुरकसें वचनोंके विवादमें विजय पावो॥ ३॥

यह वृत्तान्त जब पृथ्वीराजजीकी पत्नीने सुना तब इस विषयमें एक दोहा बनाया। और उससें अपने पतिको बोधित किया। वह यह है—

दोहा (४९)

पति जिद की पतसाहसूं, यहै सुणी नैं आज।
कहां पातल अकबर कहां, करियो बडो अकाज॥

टी०—हे प्राणपति! मैंने आज यह सुना कि आपने महाराणा साहबके सम्बन्धमें पातसाहसे जिद (विवाद) ठानीहै। परन्तु आज दिन भारतके राजाओंपर शासन करनेवाला और असंख्य सेनाओंका स्वामी अकबर कहां। और थोडेसे क्षत्रियवीरोंके साथ वन्य वृत्तिसे निर्वाह करनेवाले राणा प्रतापसिंह कहां। अर्थात् पातसाहके मलिन विचार व अधिक शक्तिपर एवं महाराणाके दृढ अभिमान और सहायसम्पत्तिकी विकलता (कमी) पर विचार कीजिये तो आपने बडा अकाज (अनर्थ किया है। क्योंकि अब अकबर उन्हें अत्यन्त कष्ट पहुँचानेका यत्न करेगा।

सुयोग्य पृथ्वी राजाजीने एक कवित्तके द्वारा ऊपर लिखे दोहेका उत्तर दिया वह कवित्त यहहै—

कवित्त (५०)

जबतैं सुनेहैं बैन तबतैं न मोकों चैन,
पाती पढि नैंक सो विलंब न लगावैगो ।
लेकै जमदूतसे समस्त राजपूत आज,
आगरेमें आठों याम ऊधम मचावैगो ।
कहै पृथ्वीराज प्रिया ! नैक उर धीर धरो,
चिरंजीवी रानाश्री मलेच्छन भगावैगो ।
मनको मरद मानी प्रबल प्रतापसिंह,
बब्बर ज्यौं तडफ अकब्बरपै आवैगो ॥

टी०—हेप्रिये! पृथ्वीराज कहताहै कि चित्तमें थोडी धीरज रक्खो। मैंने जबसे ये वचन सुने हैं कि ' महाराणा हमें बादशाह कहने लगा है ' तबसे मुझे चैन (सुख) नहीं पडता । मेरा पत्र पढकर वह वीरशिरोमणि थोडाभी विलंब नहींकरेगा । किन्तु यमदूतोंके समान शत्रुपक्षके प्राण हरनेवाले अपने सहयोगी (साथी) राजपूतोंको साथले आज दिनभी (ऐसे समयमेंभी) आगरेमें सर्वदा धावा देता रहेगा । चिरंजीवी राना म्लेच्छोंको भगादेगा वं उनकी श्री (लक्ष्मी) को उच्छिन्न करडालेगा । वह मनका मर्द अर्थात् उत्साहसम्पन्न, अभिमानी और महाबलशाली महाराणा प्रतापसिंह क्रोधसे प्रज्वलित होकर बब्बर नाहरके सदृश अकबरपर आक्रमण करेगा ।

दोहे (५१ से ६१ तक)

धर बांकी दिन पाधरा, मरद न मूकै माण ॥
घणां नरिंदां घेरियो, रहै गिरंदां राण ॥ १ ॥

टीका—जिसकी भूमि अत्यन्त विकट है और दिन अनुकूल हैं, जो वीर अभिमानको नहीं छोड़ता वह महाराणा बहुत राजाओंसे घिराहुआ पहाडोंमें निवास करता है ॥ १ ॥

पातल राण प्रवाड़ मल, बांकी घड़ा बिभाड़ ॥
षूंदाड़ै कुण है षुरां, तो ऊभां मेवाड़ ॥ २ ॥

टीका—हे विकट सेनाओंका विध्वंस करनेवाले और युद्धमें मल्ल महाराणा प्रतापसिंह! तेरे खड़े रहते मेवाड़को घोड़ोंके खुरोंसे दबानेवाला कौन है? अर्थात् तेरी भूमि कोई नहीं दबा सकता ॥ २ ॥

माई एहा पूतजण, जेहा राण प्रताप ॥
अकबर सूतो ओधकै, जाण सिराणै सांप ॥ ३ ॥

टीका—हे माता! ऐसे सुपुत्र जन, जैसा कि, महाराणा प्रतापसिंह, जिसको याद आनेसे ही सिर्हाने सर्प जानकर चमकनेवालेकी तरहं अकबर बादशाह चमक उठता है ॥ ३ ॥

अइरे अकबरियाह, तेज तुहालो तुरकड़ा ॥
नम नम नीसरियाह, राण बिना सह राजवी ॥ ४ ॥

टीका—हे अकबर बादशाह! तेरे प्रतापको देखकर बडा आश्चर्य होता है कि जिसके सामने महाराणाके बिना अन्य सब राजा झुक गये (अधीन होगये) ॥ ३ ॥

सह गावड़ियो साथ, एकण बाडै बाडियो ॥
राण न मानी नाथ, तांडै सांड प्रतापसी ॥४॥

टीका-हे अकबर ! (अध्याहार होता है) तैनें गायों-रूपी सब राजाओंको एक बाड़ेमें इकट्ठे करदिये परन्तु महाराणा प्रतापसिंहरूपी सांड तेरी नाथको नहीं मानकर गर्ज रहा है ॥ ४ ॥

पहु गोधलिया पास, आलूधा अकबर तणी ॥
राणो षिमै न रास, प्रघलो सांड प्रतापसी ॥५॥

टीका-अन्य सब छोटे बैलरूपी राजा लोग अकबरकी पाशमें उलझ (बंध) गये, परन्तु महाराणा प्रतापसिंहरूपी बलवान् सांड उसकी रस्सीको सहन करनेवाला नहीं है ॥५॥

पातल पाघ प्रमाण, सांची सांगाहर तणी ॥
रही सदा लग राण, अकबरसूं ऊभी अणी॥६॥

टीका-महाराणा संग्रामसिंहके पोते प्रतापसिंहकी पगड़ी ही गिनतीमें सच्ची है कि जो अकबरके सामने अनम्र रहनेके कारण उच्च रही ॥ ६ ॥

चोथो चीतोडाह, बांटो बाजंती तणो ॥
माथै मेवाड़ाह, थारै राण प्रतापसी ॥ ७ ॥

टीका-हे चित्तोड़के पति महाराणा प्रतापसिंह! २ घड़ीका १ चौथा हिस्सा अर्थात् पावघड़ी 'पावड़ी' हे मेवाड़के पति ! तेरे ही सिरपर है ॥ ७ ॥

बाही राण प्रतापसी, बरछी लचपच्चांह ॥
जाणक नागण नीसरी, मुंह भरियो बच्चांह ॥८॥

टीका–महाराणा प्रतापसिंहने जो लचकती हुई बरछी चलाई सो शत्रुको फोड़कर आंतोंको साथ लेकर परली तरफ निकल गई सो ऐसी शोभा देने लगी मानों सर्पिणी अपने बच्चोंको मुखमें लेकर निकली ॥ ८ ॥

बाही राण प्रतापसी, बगतरमें बरछीह ॥
जाणक झींगर जाळमें, मुंह काढ्यो मच्छीह ॥९॥

टीका–महाराणा प्रतापसिंहने जो बरछी चलाई वह शत्रुके कवचको फोड़कर परली तरफ निकल कर ऐसी शोभा देने लगी मानो झींगर मच्छी (छोटी मच्छी) ने जालमें मुंह निकाला ॥ ९ ॥

पातल घड़ पतसाहरी, एम विधूंसी आण ॥
जाण चढी कर बंदरां, पोथी बेद पुराण ॥ १० ॥

टीका–महाराणा प्रतापसिंहने बादशाहकी फोजका ऐसा विध्वंस कर डाला जैसे बंदरके हाथ वेद पुराणकी पुस्तक लगनेपर वह उसे फाड़ डालता है ॥ १० ॥

[**नोट**–उपरोक्त सब दोहे बीकानेर महाराजके भ्राता पृथ्वीराजजीने महाराणा प्रतापसिंहजीको लिखकर भेजे थे, परन्तु कई लोग सन्देह करते हैं कि ये सब उनके बनाये हुए नहीं हैं, और स्वामी गणेशपुरीजी आदि साहित्यके आधुनिक विद्वानोंका मत है कि ' धरबांकी दिन पाधरा ' यह दोहा

पृथ्वीराजजीका ही बनाया हुआ है, कुछ भी हो इन दोहोंसे यह बात भलीभांति जानी जासकती है कि उस समयके पुरुषोंका प्रेम स्वधर्मरक्षाके कारण महाराणा प्रतापसिंहजी पर कैसा था ।)

गीत (६२)

नर तेथ निमाणा निलजी नारी,
अकबर गाहक बट अबट ॥
चोहटै तिण जायर चीतोड़ो,
बेचै किम रजपूत बट ॥ १ ॥
रोजायतां तणैं नवरोजै,
जेथ मुसाणा जणो जण ॥
हींदू नाथ दिलीचे हाटे,
पतो न षरचै षत्रीपण ॥ २ ॥
परपँच लाज दीठ नह व्यापण,
षोटो लाभ अलाभ षरो ॥
रज बेचबाँ न आवै राणो,
हाटे मीर हमीर हरो ॥ ३ ॥

---

(१) कर्नल जेम्स टाडने अपने बृहत् पुस्तक "टाड राजस्थान" में महाराज पृथ्वीराजजीके एक गीत और कई दोहोंका भाषान्तर दिया है, उनमेंसे गीततो "नर तेथ निमाणा" इत्यादि है और उनमेंसे कई दोहे भी इनमें दिए गए हैं ।

पेषे आपतणा पुरसोतम,
रह अणियाल़तणैं बल़राण ॥
षत्र बेचिया अनेक षत्रियां,
षत्रवट थिर राखी षूमाण ॥ ४ ॥
जासी हाट बात रहसी जग,
अकबर ठग जासी एकार ॥
रह राषियो षत्री ध्रम राणै,
सारा ले बरतो संसार ॥ ५ ॥

[बीकानेरमहाराजाके भाई पृथ्वीराजजी कृत.]

टीका—जहांपर मानहीन पुरुष और लज्जाहीन स्त्रियां हैं और अकबर जैसा ग्राहक है, उस चौपड़के बाजारमें जाकर चीतोड़का स्वामी रजपूतीका हिस्सा कैसे विक्रय करेगा ॥ ॥ १ ॥ मुसलमानोंके नवरोजेकी जगह प्रत्येक व्यक्ति लुट-गया परन्तु हिन्दुओंका पति प्रतापसिंह उस दिल्लीके बाजारमें अपने क्षत्रियपनको क्योंकर खरचै ॥ २ ॥ वंशलज्जासे भरी दृष्टिपर अन्यका प्रपञ्च नहीं व्यापता है इसीसे पराधीनताके सुखके लाभको बुरा और अलाभको अच्छा समझकर बाद-शाही दुकानपर रज बेचनेके लिये हम्मीरका पोता राणा प्रतापसिंह कदापि नहीं आता ॥ ३ ॥ अपने पुरुषाओंका उत्तम कर्तव्य देखते हुए महाराणाने भालेके बलसे क्षत्रिय धर्मको अचल रक्खा और अन्य क्षत्रियोंने अपने क्षत्रियत्वको

विक्रय कर डाला ॥ ४ ॥ ठगरूपी अकबर भी एक दिन इस संसारसे कूंच कर जावेगा और यह हाट भी उठ जावेगी परन्तु संसारमें यह बात अमर रह जावेगी कि क्षत्रियोंके धर्ममें रहकर उस धर्मको केवल राणा प्रतापसिंहने ही रक्खा अब पृथ्वीभरमें सबको उचित है कि उस क्षत्रियत्वको अपने बरतावमेंलो अर्थात् राणा प्रतापसिंहकी भाँति आपत्ति भोगकर भी पुरुषार्थसे धर्मकी रक्षा करो ॥ ५ ॥

गीत (६३)

ऊगां दन समैं करै आषाड़ा,
चोरँग भुवन हसत अणचूक ॥
रोदांतणा रगतसूं राणा,
रंगियो रहै तुहालो रूक ॥ १ ॥
मोकल़हरा महाजुध मचतै,
बचतां सर नत्रीठ बहै ॥
पातल तूझ तणो पडियाल़ग,
रुधर चरचियो सदा रहै ॥ २ ॥
षित कारणैं करै नित षल़बट,
षेटै कटक तणा षुरसाण ॥
प्रसणां सोण अहोनस पातल,
षग सावरत रहै षूमांण ॥ ३ ॥

ऊगां सूर समो ऊदावत,
बढै बँसू छल बोल विरोल ॥
चलु अल अरी तणैं चीतोड़ा,
चंद्रप्रहास रहै नत चोल ॥ ४ ॥

[बीकानेरके महाराजके भाई पृथ्वीराजजीकृत.]

टीका—हे राणा ! तेरे नहीं चूकनेवाले हाथ दिन ऊगते समयही युद्धभूमिमें अखाड़ा (युद्ध) करने लगते हैं, और तेरी २ तलवार १ यवनोंके रक्तसे रंगी हुई रहती है ॥ १ ॥ हे मोकलके पोते महाराणा प्रतापसिंह ! महायुद्धमें तेरा ३ खड्ग बचते हुए शत्रुओंके सिरोंपर बडे वेगसे चलता है इसही कारणसे सदा रुधिरसे रंगा हुआ रहता है ॥ २ ॥ हे षुम्माणके वंश वाले प्रताप ! तू ४ पृथ्वीके लिये नित्य यवनोंके कटकसे युद्ध करके दुष्टोंके टुकडे टुकडे कर डालता है और खलोंके रुधिरसे तेरा खड्ग सदा लाल रहता है ॥ ३ ॥ हे उदयसिंहके पुत्र ! सूर्योदय समयमें ही पृथ्वीके अर्थ युद्ध होता है और तेरा चंद्रप्रहास (खड्ग) सदा शत्रुओंके शोणितसे रक्तवर्ण रहताहै ॥ ४ ॥

बिरुद छिहत्तरी ।

आढा जातिके चराण कविवर्य दुरसाजीकृत-

सौराष्ट्री सोरठे ६४-१३९ तक ।

अलष पुरुस आदेस, देस बचाय दयानिधे ॥
बरणन करूं विसेस, सुहृद नरेस प्रतापसी ॥१॥

टीका-हे अगोचर दयानिधि पुरुष ! (परमेश्वर) तुमको नमस्कार है । देशके सुहृद (मित्र) महाराणा प्रतापसिंहकी रक्षा कीजिये मैं उसीका वर्णन करता हूं ॥ १ ॥

(१) इस छिहत्तरीके रचयिता आढाशाखाके चारण कवि दुरसाजी सीरोही राज्यके पोलपात थे और कवि होनेके साथ ही वीर भी थे । उदयपुर महाराणा साहब प्रतापसिंहजीके छोटे भाई जगमाल जी उनसे नाराज होकर अकबरके पास चले गये और अकबरनें इनको सीरोहीका आधा राज्य देदिया और सीरोहीके राव सुलतानसे वह राज्य दिलानेके अर्थ अपनी फौज साथ दी जिसमें दुरसाजी भी साथ थे। इस युद्धमें जगमालजी मारे गये और बादशाही फौज हारकर भागी तब सीरोही रावजीने खेत सम्हाला जहां दुरसाजीको उनके चारण कहनेपर चिकित्सा कराकर पोलपात बनालिया । जोधपुरके मोटे राजाने सब चारणोंकी जीविकाएं खोसली थीं तब ये धरणेमें शामिल थे और अकबरके पास जाकर उससे महाराजको उपालंभ दिलाकर सब जागीरें पीछी दिलवाई इनको अकबरके दर्बारमें बैठनेकी इज्जत थी।

गढ ऊँचो गिरनार, नीचो आबूही नहीं ॥
अकबर अघ अवतार, पुन अवतार प्रतापसी ॥२॥

टीका–ऊंचे पनमें गिरनारका गढ ऊंचा है तो आबूका गढ क्या उससे नीचा है? पापका अवतार होनेमें अकबर ऊंचा है, तो पुण्यका अवतार होनेमें प्रतापसिंह क्या उससे न्यून है ॥ २ ॥

कलजुग चलै न कार, अकबर मन आंजस युहीं ॥
सतजुग सम संसार, परगट राण प्रतापसी ॥ ३ ॥

टीका–कलियुगरूपी अकबरके मनमें हर्ष वृथा है, क्योंकि संसारमें जबतक सत्ययुगरूपी महाराणा प्रतापसिंह विद्यमान हैं तबतक उसकी (अकबरकी) मर्यादा नहीं बढेगी ॥ ३ ॥

अकबर गरब न आण, हींदू सह चाकर हुवा ॥
दीठो कोइ दीवांण, करतो लुटका कटहड़ै॥४॥

टीका–हे अकबर! सब हिन्दुओंके नौकर होजानेसे तू मनमें क्यों घमंड करता है? क्या कभी किसी १ महाराणाको कटहरे (बादशाहके सिंहासनके कटहरा लगा रहता था) के सामने लटका करते देखा था? ॥ ४ ॥

सुणतां अकबर साह, दाह हिये लागी दुसह ॥
बिसमल्ला बदराह, एक राह करदूं अवस ॥५॥

टीका–प्रतिपक्षियोंका स्वाधीनपन सुनकर अकबरके मनमें असह्य जलन लग गई, और विचारने लगा कि मुसलमान धर्मके विपक्षियोंको एकमार्गमें (मुसलमान) करदूंगा ॥ ५ ॥

मन अकबर मज़बूत, फूट हींदवां बेफिकर ॥
काफर कोम कपूत, पकड़ूं राण प्रतापसी ॥ ६ ॥

टीका–हिंदुओंमें फूट देखकर अकबरका मन मजबूत और बेफ़िकर होगया । विचारने लगा कि काफ़िरोंकी (हिंदुओंकी) कौममें महाराणा प्रतापसिंहही कुपुत्रहैं जिन्हें पकड़लूं ॥ ६ ॥

अकबर कीना आद, हींदू नृप हाजर हुवा ॥
मेदपाट मरजाद, पग लागो न प्रतापसी ॥ ७ ॥

टीका–अकबरके याद करतेही सब हिंदू राजा आ उपस्थित हुए परन्तु मेवाड़की मर्यादा रखनेवाला महाराणा प्रतापसिंहने हाजिर होना नहीं चाहा ॥ ७ ॥

मेछां आगल़ माथ, नमैं नहीं नरनाथरो ॥
सो करतब समराथ, पालै राण प्रतापसी ॥ ८ ॥

टीका–'मुसलमानोंके आगे नरनाथ (प्रतापसिंह) का सिर नहीं नमता ' इस कर्तव्यको पालन करनेमें समर्थ केवल महाराणा प्रतापसिंहही हैं ॥ ८ ॥

बुहा.बडेरा बाट, बाट तिकण बहणो बिसद ॥
षाग त्याग षत्रवाट, पूरो राण प्रतापसी ॥ ९॥

टीका-क्षत्रियोंका प्राचीन मार्ग यही है कि जिस मार्गमें अपने पुरुषा चले उसी उज्वल मार्गमें चलना अर्थात् 'तलवार चलाना और दान देना' इसमें महाराणा प्रतापसिंह ही पूर्ण रीतिसे चलताहै ॥ ९ ॥

चितवै चित चीतोड़, चिता जळाई सोच तर ॥
मेवाड़ो जग मोड़, पावन पुरुष प्रतापसी॥१०॥

टीका-मेवाड़के पति, जगतके मुकुट, उत्तम पुरुष महाराणा प्रतापसिंह चित्तमें चित्तोडकी चिंता किया करतेहैं और इसी सोचसे उनके चित्तमें चिता जल रही है ॥ १० ॥

कदे न नामै कंध, अकबर ढिग आवै न ओ ॥
सूरजवंस सँबंध, पाळै राण प्रतापसी ॥ ११ ॥

टीका-महाराणा न तो कभी अकबरके समीप आते हैं, और न कभी सिर नमाते हैं, यह महाराणा प्रतापसिंह सदा सूर्यवंशके संबन्धकी पालना करते हैं ॥ ११ ॥

अकबर कुटिल अनीत, और बिटळ सिर आदरै ॥
रघुकुळ उत्तम रीत, पाळै राण प्रतापसी ॥१२॥

टीका-कुटिल अकबरकी अनीतिको अन्य बिगडे हुए राजालोग आदर सहित मस्तक पर चढाते हैं, परन्तु रघु

कुलकी उत्तमरीतिका पालन करनेवाले केवल महाराणा प्रतापसिंह ही हैं ॥ १२ ॥

लोपै हींदू लाज, सगपण रोपै तुरकसूं ॥
आरजकुळरी आज, पूंजी राण प्रतापसी॥१३॥

टीका—हिन्दू सब लज्जाको लुप्त करके यवनोंसे संबन्ध करने लगगये, परन्तु आज दिन आर्य कुलका उत्तम द्रव्य महाराणा प्रतापसिंह ही हैं ॥ १३ ॥

अकबर पथर अनेक, के भूपत भेळा किया ॥
हाथ न लागो हेक, पारस राण प्रतापसी॥१४॥

टीका—अकबरनें अन्य राजारूपी कई पत्थर इकठे करलिये, परन्तु पारसरूपी एक महाराणा प्रतापसिंह हाथ नहीं लगा ॥ १४ ॥

सांगो धरम सहाय, बाबरसूं भिड़ियो बिहस ॥
अकबर कदमां आय, पड़ै न राण प्रतापसी॥१५॥

टीका—पहिले महाराणा संग्रामसिंह धर्मकी सहायताके-लिये बाबरसे लड़े थे, और अब उसी परम्पराके अनुसार महाराणा प्रतापसिंह अकबरके पैरोंमें नहीं पड़ते ॥ १५ ॥

आपै अकबर आण, थाप उथापै ओ घिरा ॥
बापै रावळ बाण, तापै राण प्रतापसी ॥ १६ ॥

टीका–अकबर अपनी दुहाई पृथ्वीपर जमाता है, उसे यह दूर करदेते हैं। बापारावलके वंशकी आदतको महाराणा प्रतापसिंह नहीं छोड़ते ॥ १६ ॥

सुष हित स्याल समाज, हींदू अकबर बस हुवा॥
रोसीलो मृगराज, पजै न राण प्रतापसी॥१७॥

टीका–अपने सुखके लिये गीदड़रूपी अन्य राजाओंके समूह अकबरके वशमें होगये, परन्तु क्रुद्ध सिंहरूपी महाराणा प्रतापसिंह उसके अधीन नहीं होंगे ॥ १७ ॥

अकबर कूट अजाण, हियाफूट छोडै न हठ ॥
पगां न लागण पाण, पणधर राण प्रतापसी॥१८॥

टीका–अकबर अज्ञान और मूर्ख है जो अपने झूठे हठको नहीं छोड़ता, परन्तु उसके पैरोंमें नहीं पड़नेकी प्रतिज्ञाको धारण करनेवाले महाराणा प्रतापसिंह अपने पराक्रमको नहीं छोड़ेंगे ॥ १८ ॥

है अकबर घर हाण, डाण ग्रहे नीची दिसट ॥
तजै न ऊंची ताण, पोरस राण प्रतापसी॥१९॥

टीका–अकबरके घरमें हानि होनेके कारण वह चलते समय अपनी दृष्टि नीची कर लेताहै, परन्तु ऊंची दृष्टिसे देखने वाले महाराणा प्रतापसिंह अपने पुरुषार्थको नहीं छोड़ते (नीची दृष्टि अधर्म, पराजय, और लज्जासे होती है और ऊंची दृष्टि धर्म, विजय और कुलाभिमानसे होती है) ॥ १९ ॥

जाणै अकबर जोर, तो पिण ताणै तोर तिड़े ॥
आ बलाय ह औौर, पिसणा षोर प्रतापसी॥२०॥

टीका–अकबर अपने बलको जानताहै तोभी यवनजातिके १ पक्षको नहीं छोड़ता, परन्तु यह नहीं जानता कि शत्रुओंको भक्षण करजाने वाले महाराणा प्रतापसिंह और ही आफतहैं२०

अकबर हिये उचाट, रात दिवस लागी रहै ॥
रजवट बट समराट, पाटप राण प्रतापसी॥२१॥

टीका–अकबरके हृदयमें रात दिन उच्चाटनही लगा रहता है, परन्तु महाराणा प्रतापसिंह क्षात्र धर्मके अभिमानको रखने वाले सम्राट् शिरोमणिहैं ॥ २१ ॥

अकबर मारग आठ, जवन रोक राखी जगत ॥
परम धरम जस पाठ, पढियो राण प्रतापसी २२॥

टीका–यवन अकबरने संसारमें आठोंही मार्गों (चार वर्णधर्म और चार आश्रमधर्मों) को रोकदिये हैं, परन्तु उसमें भी अपने परम धर्मके यशको पाठ करनेवाले अर्थात धर्मके रक्षक महाराणा प्रतापसिंह ही हैं ॥ २२ ॥

अकबर समँद अथाह, तिंहँ डूबा हींदू तुरक ॥
मेवाड़ो तिण मांह, पोयण फूल प्रतापसी॥२३॥

टीका–अकबर अथाह समुद्र रूपहै और उसमें हिन्दू और यवन डूब गये हैं, परन्तु मेवाड़के पति महाराणा श्रीप्रतापसिंह

जी उस समुद्रमें कमलके फूलके समान ऊंचे रहनेसे जलको स्पर्श नहीं करते ॥ २३ ॥

अकबरिये इक बार, दागल की सारी दुनी ॥
अणदागल असवार, रहियो राण प्रतापसी २४॥

टीका-अकबरने एकही बारमें सब दुनियांके दाग लगा दिया अर्थात् सब घोड़ोंके बादशाही दाग लगवा दिये परन्तु विना दागके घोड़ेके सवार महाराणा प्रतापसिंहही रहेहैं ॥२४॥

अकबर घोर अँधार, ऊँघाणा हींदू अवर ॥
जागै जगदातार, पोहरै राण प्रतापसी ॥ २५ ॥

टीका-अकबररूपी घोर अन्धकारमें और सब हिन्दू तंद्रित होगये, परन्तु जगतका दाता महाराणा प्रतापसिंह (धर्मरूपी धनकी रक्षा करनेके लिये) पहरे पर खड़ाहै ॥२५॥

जग जाडा जूझार, अकबर पग चांपै अधिप ॥
गौ राषण गुंजार, पिंडमें राण प्रतापसी ॥२६॥

टीका-जगतमें जितने अच्छे वीरहैं वे सब अकबरके पैर दबातेहैं, परन्तु पृथ्वी और गौकी रक्षा करनेवाले महाराणा प्रतापसिंह अकबरके हृदयको चांपतेहैं (अर्थात् अकबरके बैरी होनेके कारण उसे महाराणाका सदा ध्यान बना रहताहै)२६॥

अकबर कनै अनेक, नम नम नीसरिया नृपति॥
अनमी रहियो एक, पहुवी राण प्रतापसी॥२७॥

टीका-अकबरके पास सब राजा मस्तक नमा २ कर निकल गये पृथ्वीपर महाराणा प्रतापसिंहही केवल अनम्र रहाहै ॥ २७ ॥

करै कुसामद कूर, करै कुसामद कूकरा ॥
दुरस कुसामद दूर, पुरस अमोल प्रतापसी॥२८॥

टीका-खुशामद यातो झूँठे मनुष्य करतेहैं, या कुत्ते करते हैं, मैं दुसरा कवि खुशामदसे दूर होकर कहता हूं कि अमूल्य पुरुष महाराणा प्रतापसिंह ही हैं ॥ २८ ॥

अकबर जंग उफाण, तंग करण भेजै तुरक ॥
राणावत रिढ राण, पाण न तजै प्रतापसी॥२९॥

टीका-अकबर युद्धकी ऊफानसे महराणाको तंग करनेके लिये यवनोंको भेजता है, परन्तु रावणके समान हठ करने वाले राणा उत महाराणा प्रतापसिंह अपने पराक्रमको नहीं छोड़ते ॥ २९ ॥

हल्दी घाट हरोल, घमँड उतारण अरि घड़ा ॥
आरण करण अडोल, पहुँच्यो राण प्रतापसी॥३०॥

टीका-शत्रुकी सेनाका गर्व मिटानेके लिये हलदी घाटकी लड़ाईमें अग्रसर होकर युद्ध करनेके लिये अविचल महाराणा प्रतापसिंह पहुंचे ॥ ३० ॥